ज्ञान तुम्हें शीतल बनाता
काम-क्रोध की आग को ख़त्म करता
भक्ति से आग ख़त्म नही होती
आत्म -अभिमानी बन बाप को याद करना
बाप की याद में देह को भूलना
इसमें ही विघ्न पड़ता
भक्ति माना देह की याद
संग -दोष से संभाल करनी
ड्रामा को अच्छी तरह समझ हर्षित रहना
सब कुछ अपना नयी दुनिया में ट्रान्सफर करना
व्यर्थ का चिंतन नही करना
बीती को रहमदिल बन कर समाना
संतुष्टमणि बनो, तो प्रभु प्रिय,लोकप्रिय और
स्वयं प्रिय बन जायेंगे

ॐशांति!!!
मेरा बाबा!!!